भारत की मानव प्रजातियाँ
(Races of India)

भारत एक उपमहाद्वीप (sub-continent) है, जिसमें मानव प्रजाति के कई प्रभेद (human strains) प्राचीन कालों से निवास करते आये हैं। **पंचानन मित्रा** (Mitra), **ग्रिफ्फिथ टेलर** (G. Taylor), **एच. डि-टैरा** (H. de-Terra)[1] कुछ विख्यात मानव विज्ञानियों (anthropologists) आदि का मत है कि भारत के शिवालिक क्षेत्र में भी मानव-प्रजातियों का उद्‌गम-क्षेत्र (cradle-land) रहा है। इस पुस्तक के लेखक को जो पुराप्रस्तर काल (palaeolithic age) के पत्थर के औज़ार तथा आदि-पाषाण औज़ार (eoliths) मिले हैं, उनके आधार पर, तथा जीवाश्म-विज्ञान (palaeontology) और जलवायु की खोजों के आधार पर, यही प्रतीत होता है कि मानव के आदि-पूर्वजों का उद्‌गम क्षेत्र भारत में शिवालिक प्रदेश था, जो बाद में तिब्बत और ऑक्सस तक विस्तृत हो गया था।[2] कम से कम '**ऑस्ट्रेलॉयड**' (Australoid) प्रजाति का उद्‌गम प्रदेश तो निश्चित रूप से भारत में ही माना जाता है। '**ऑस्ट्रेलॉयड**' शब्द का अर्थ है 'दक्षिण प्रदेश का'। अतः प्राचीन काल से ही मानव समूह भारत के बाहर दूसरे देशों को, जैसे पूर्वी-द्वीपसमूह, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, आदि को जाते रहे हैं। इसके अलावा, मध्य एशिया तथा यूरोप से बहुत बार मानव वर्ग भारत में आये हैं।

इस प्रकार पुरा-प्रस्तर काल से लेकर ऐतिहासिक युगों तक मनुष्य प्रजाति के अनेक प्रभेद भारत में मिश्रित होते रहे। एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित होने के कारण तथा उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर ऊँची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ होने के कारण भारत प्रकृति के द्वारा सुरक्षित रहा है। इस देश में मनुष्यों का आवागमन अधिकतर पर्वतीय दर्रों के द्वारा ही रहा है। समुद्री मार्ग से आवागमन केवल ऐतिहासिक युग में ही हुआ है। भारत भूमि की प्राकृतिक रचना का प्रभाव मानव-प्रजातियों पर यह रहा है, कि जो मानव-प्रजातियाँ इस देश में पूर्वकाल में आयीं और यहाँ बस गयीं, वे अन्त तक नष्ट नहीं हुई, यद्यपि उनमें से कुछ दक्षिण और पूर्व को चली गयीं, परन्तु वे आज भी भारत की जनसंख्या का भाग बनी हुई हैं।

भारत की पहाड़ियों और वनों में आदिम जनजातियों (primitive tribes) की एक बड़ी संख्या को शरण मिली थी, और उन क्षेत्रों में वे आदिम-जन-जातियाँ अपनी पृथक् संस्कृति को लिये हुए अभी तक मौजूद हैं। इसलिए भारत की जनसंख्या में कुछ जन-जातियाँ अति प्राचीन वर्गों (primitive strains) की भी हैं, और वे संसार की उन भिन्न प्रजातियों की प्रतिनिधि हैं, जो इतनी बड़ी संख्या में किसी दूसरी जगह नहीं मिलती हैं।

बी. एस. गुहा द्वारा वर्गीकरण
(B. S. Guha's Classification)

बी. एस. गुहा भारत के एन्थ्रोपोलॉजी विभाग के डायरेक्टर थे। उन्होंने भारत की प्रजातियों का वर्गीकरण बड़े वैज्ञानिक ढंग से किया है। उन्होंने 1931 की जनगणना में भारत की कुछ प्रजातियों की एन्थ्रोपोमीट्रिक (anthropometric) नाप की थी, और रिशले के वर्गीकरण के दोषों को दूर करके उसे शुद्ध किया था। उनका वर्गीकरण 1944 में प्रकाशित हुआ था।[4]

गुहा के अनुसार भारत में छः मुख्य प्रजाति वर्ग हैं जिनमें 9 उपभेद हैं—

(1) नैगरिटो (Negrito)।

(2) प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉइड (Proto-Australoid)।

(3) मंगोलॉइड (Mongoloid) इसके दो उपवर्ग हैं।

(i) पैले-मंगोलॉइड (Palae-Mongoloid)। (अ) लम्बे सिर वाले। (आ) चौड़े सिर वाले।

(ii) टिबैटो-मंगोलॉइड (Tibeto-Mongoloid)।

(4) मैडिटरेनियन (Mediterranean), इस प्रजाति के तीन उपवर्ग हैं —

(i) पैले-मैडिटरेनियन (Palae-Mediterranean)।

(ii) मैडिटरेनियन (Mediterranean), (iii) औरिऐण्टल (Oriental)।

(5) पश्चिमी चौड़े सिर वाले (Western Brachycephals)। इनके तीन भेद हैं —

(i) अल्पाइनॉइड (Alpinoid), (ii) डिनारिक (Dinaric), (iii) आरमेनॉइड (Armenoid)।

(6) नॉरडिक (Nordic)।

[I] नैगरिटो

(Negrito)

ये लोग नाटे कद के (150 सेमी से कम) होते हैं। इनके बाल छल्लेदार (peppercorn) और थोड़े होते हैं। बाल की ऊर्ध्वकाट (cross-section) अंडाकार होती है। सिर छोटा, माथा आगे की ओर निकला हुआ, भौं की हड्डियाँ सपाट और ठुड्डी बहुत छोटी होती है। सिर की आकृति लम्बाकार तथा कुछ की गोल होती है। त्वचा का रंग काला, भुजायें कमजोर और बाहें (arms) लम्बी होती हैं।

नैगरिटो प्रजाति के लोग अंडमान द्वीपसमूह में रहते हैं तथा कोचीन, ट्रावनकोर पहाड़ियों में कादर (Kadar) और पुलायन (Pulayan) जातियाँ नैगरिटो हैं। विनाद (Wynaad) की आदिम जाति और इरुला (Irula) जाति भी इसी प्रकार की हैं। इनके होंठ मोटे और ऊपर को मुड़े होते हैं।

[II] प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉइड

(Proto-Australoid)

दक्षिण भारत और मध्य भारत की आदिम जातियाँ मुख्यत: प्रोटो-आस्ट्रेलॉइड हैं। इनकी त्वचा का रंग लगभग काला होता है। बाल लहरदार (wavey) और कुछ के छल्लेदार (curly) भी होते हैं। नाक चौड़ी और चपटी, तथा नाक की जड़ नीचे की ओर दबी हुई होती है। होंठ मांसल (fleshy) और लौटे हुये (everted) होते हैं। चेहरे का भाग बाहर की ओर निकला होता है, जैसे — नैगरीटोज़ का।

आदिम जातियों में चेन्चू (Chenchu), मलायन, कुरुम्बा, येरुवा (Yeruva), मुण्डा (Munda), संथाल (Santhal) और कोल वर्ग प्रोटो-आस्ट्रेलॉइड है। ऐसा मालूम होता है कि प्राचीन काल में जो आदिम जाति भारत से आस्ट्रेलिया को गई थी, वह दक्षिणी भारत से श्रीलंका और मलेशिया होती हुई गयी थी। दक्षिणी भारत में उसकी शारीरिक विशेषतायें पहले ही विकसित हो चुकी थीं और आस्ट्रेलिया के मरुस्थल में जाने के बाद दूसरी प्रजातियों से अलग रहने के कारण उनका और अधिक विकास हुआ। आस्ट्रेलिया और भारत की आदिम जातियों के रक्तवर्ग (blood-group) में 'अ' एग्लूटिनोजन (agglutinogen A) की अधिक मात्रा है, और दोनों में समानता है। मध्य भारत और दक्षिण भारत की आदिम जातियों के अलावा, उत्तरी भारत में भी इस प्रजाति के लोग बड़ी संख्या में हैं। परिगणित जातियाँ प्राय: प्रोटो-आस्ट्रेलॉइड हैं।

[III] मंगोलॉइड

(Mongoloid)

इनके शरीर और चेहरे पर बाल कम होते हैं। चेहरे के भाग प्राय: सपाट होते हैं, जिनमें गालों की हड्डियाँ बाहर को उभरी हुई होती हैं। इस प्रजाति की सबसे मुख्य विशेषता तिरछी आँखे हैं, परन्तु कुछ मंगोलॉइड प्रजातियों में ऐसी आँखे भी नहीं होतीं। इनका कद मंझला होता है। इस प्रजाति के निम्न उपभेद हैं —

1. पैले-मंगोलॉइड — यह अधिक आदिम स्वभाव के हैं। इनका कद मंझला, त्वचा हल्की भूरी, चेहरा छोटा, गाल की हड्डियाँ उभरी हुईं और नाक मंझली, परन्तु नीची होती है। चेहरे और शरीर पर बाल बहुत कम होते हैं और आँखें तिरछी होती हैं। यह प्रजाति उप-हिमालय प्रदेश में मिलती है। विशेषकर, असम की आदिम जातियाँ और भारत-ब्रह्मा सीमा की आदिम जातियाँ पैले-मंगोलॉइड हैं।

2. चौड़े सिर वाले पैले-मंगोलॉइड — इन लोगों की त्वचा का वर्ण कालापन लिये हुए पीला होता है। चेहरा अधिक गोल होता है। आँखें तिरछी होती हैं। चटगाँव की पहाड़ी जातियों में, जैसे — चकमा और माघ में, ऐसे ही लक्षण होते हैं।

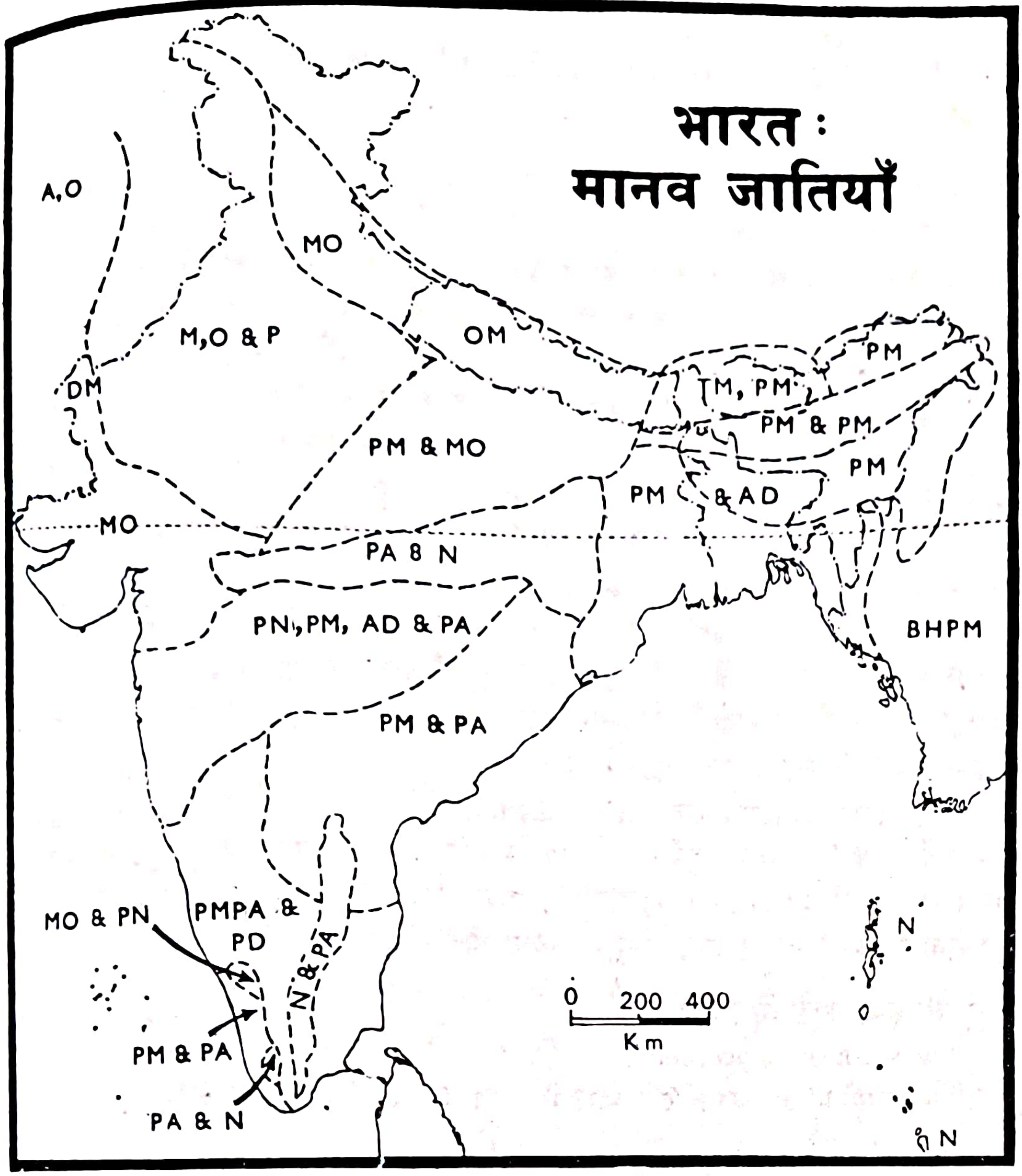

भारत में मानव प्रजातियों का वितरण (बी० एस० गुहा के अनुसार)

AO – Alpodianarics Orientals. MO & P– Mediterraneans, Orientals & Proto-nordics. MO– Medit. & Orientals OM– Orientals & Mongoloid. TMPM– Teleate Mongoloid, Palae-Mongoloids. PM Palae-Mongoloids. PM & PM– Palae-Mongoloid & Palae-Mediterraneans. DM –Dinarics & Mediterraneans. PM & AD – Palae-Mediterraneans, & Alpo-Dinarics. PM & MO – Palae-Mediterraneans, Mediterraneans and Orientals. BHPM – Broad Headed Palae Mongoloids. PA & N – Proto-Australoids and Negritos. PN, PM, AD & PA – Proto-Nordics, Palae-Mediterraneans. Alpo-Dinarics and Proto-Australoids. PM & PA – Palae- Mediterraneans, Proto-Australoids. PM, PA & PD – Palae-Mediterraneans, Proto-Australoids and Proto-Dinarics, MO & PN – Mediterraneans, Orientals and Proto-Nordics. N & PA – Negritos and Proto-Australoids. PA & N – Proto-Australoids and Negritos, N – Negritos.

3. टिबैटो-मंगोलॉइड — इनका कद लम्बा और त्वचा का रंग हल्का होता है। शरीर पर बाल नहीं होते, केवल सिर पर होते हैं। आंखें तिरछी होती हैं। चेहरा लम्बा परन्तु चपटा होता है। नाक लम्बी

तथा नीची होती है। शरीर और सिर दोनों भारी होते हैं। भारत की प्रजातियों में सबसे बड़ा सिर इनका होता है। यह प्रजाति सिक्किम और भूटान में रहती है। पश्चिमी हिमालय के कुछ भागों में भी यह प्रजाति पायी जाती है।

[IV] मैडिटरेनियन

(Mediterranean)

1. पैले-मैडिटरेनियन — इनका पहला उपवर्ग **पैले-मैडिटरेनियन** प्रजाति है। इसका कद मंझला और शरीर हल्का होता है। सिर लम्बा और पतला होता है तथा सिर का महराब ऊँचा होता है। मस्तक आगे को निकला हुआ और सिर का पिछला भाग पीछे की ओर को निकला हुआ होता है। चेहरा पतला और ठुड्डी नोकदार, नाक छोटी परन्तु ऊँची और मंझली चौड़ाई की होती है। चेहरे और शरीर दोनों पर बाल कम होते हैं। त्वचा का रंग भूरा होता है। सम्भव है कि यह प्रजाति नये प्रस्तर काल (Neolithic age) में भारत में आयी थी। बाद में यह दक्षिण की ओर चली गई।

2. मैडिटरेनियन — इस प्रजाति का कद मंझला और त्वचा का रंग भूरे से जैतूनी तक होता है। सिर लम्बा परन्तु सिर का महराब नीचा, और चेहरा लम्बा होता है। नाक पतली तथा उभरी हुई होती है। शरीर पतला होता है। चेहरे और शरीर पर बाल बहुत होते हैं। बाल और आँखों का रंग गहरे भूरे रंग से काले रंग तक होता है। मैडिटरेनियन प्रजाति की एक विशेषता यह है कि इसकी आँखें सबसे अधिक बड़ी, खुली हुई होती हैं, जो अन्य किसी प्रजाति में नहीं पायी जातीं। यह प्रजाति उत्तर प्रदेश, पंजाब, बम्बई, बंगाल, मालाबार आदि में रहती है।

3. ओरियण्टल मैडिटरेनियन (Oriental Mediterranean) — यह प्रजाति भारत में बाद में आयी थी। यह ऊपर लिखी हुई मैडिटरेनियन प्रजाति से मिलती-जुलती है; परन्तु इनकी नाक बहुत ज्यादा लम्बी प्रायः उत्तल (convex) होती है। त्वचा का वर्ण गोरा होता है, यद्यपि भारत में कुछ गेहुँआ रंग होता है। यह प्रजाति पंजाब; सिन्धु, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रहती है।

[V] पश्चिमी चौड़े सिर वाले

(Western brachycephals)

ये प्रजातियाँ पश्चिम की ओर से भारत में आयी थीं। इनके तीन उपवर्ग हैं —

(1) अल्पाइनॉइड्स, (2) डिनारिक्स, (3) आरमेनॉइड्स।

1. अल्पाइनॉइड (Alpinoid) — इस प्रजाति का सिर चौड़ा और कद मंझला तथा छोटा होता है। सिर के पीछे का भाग गोल होता है। चेहरा गोल, नाक उभरी हुई, रंग गोरा और चेहरे तथा शरीर पर बहुत बाल होते हैं। शरीर सुगठित और कुछ भारी होता है। यह प्रजाति सिन्धु प्रदेश, दक्षिण तिन्नेवेली, आन्ध्र तथा काठियावाड़, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिल प्रदेश में पायी जाती है। पूर्वी उत्तर-प्रदेश, बिहार और गंगा डेल्टा में भी पायी जाती है।

2. डिनारिक (Dinaric)—इस प्रजाति का कद अधिक लम्बा होता है। त्वचा का रंग और विशेषकर बालों तथा आँखों का रंग साँवला होता है। सिर इतना चौड़ा नहीं होता जितना कि अल्पाइन प्रजाति का; परन्तु बहुत छोटा होता है, जिसमें सिर के पीछे का भाग चपटा होता है। मस्तक कुछ अन्दर की ओर धंसा होता है और सिर का महराब बहुत ऊँचा होता है। चेहरा लम्बा और नाक काफी लम्बी तथा चोंच पर ऊपरी ओंठ की तरफ मुड़ी हुई होती है। सिर के पिछले भाग का सपाट होना और नाक का बहुत लम्बी होना, ये दोनों विशेषताएँ इस प्रजाति की हैं। यह प्रजाति बंगाल और उड़ीसा में

मैडिटरेनियन प्रजाति से मिल गयी है। यह काठियावाड़, तमिल और कर्नाटक प्रदेश में भी है। कुर्ग में यह शुद्ध रूप में मिलती है। गुजरात में डिनारिक और अल्पाइन प्रजातियों का मिश्रण हो गया है। महाराष्ट्र में इसका मिश्रण लम्बे सिर वालों से हुआ है। इसकी एक शाखा उत्तर पश्चिम हिमालय से पश्चिमी नेपाल को गयी थी।

3. **आरमेनॉइड** (Armenoid) — इस प्रजाति का कद मंझला, सिर चौड़ा और नाक बहुत लम्बी होती है। शरीर पर बहुत अधिक बाल होते हैं। बम्बई के पारसी लोग आरमेनॉइड प्रकार के हैं।

[VI] नॉरडिक (Nordics)

भारतवर्ष में बड़े पैमाने पर सबसे अन्तिम प्रजाति-आवास उस मानव समूह का था जो उत्तरी स्टैप्पी (Northern Steppe) ज़ाति के लोग थे ईसा से लगभग 2,000 वर्ष पूर्व यह प्रजाति उत्तरी-पश्चिमी भारत में आयी। यह सम्भव है कि उस प्रजाति का विकास पहले मध्य एशिया में हुआ हो। दक्षिण रूस में कुरगान्स (Kurgans) में तथा मिनुसिन्स प्रदेश में इसी प्रकार प्रजाति की ठठरियों के प्रमाण मिले हैं। प्राचीन वैदिक साहित्य में उनके उत्तरी मूल प्रदेश के प्रसंग हैं। इस प्रजाति के सिर भारत की अन्य लम्बे सिर वाली दूसरी प्रजातियों के सिर से बड़े होते हैं। सिर का महराब नीचा, चेहरा लम्बा और जबड़े मजबूत होते हैं। इनका शरीर सुगठित और क़द बहुत लम्बा होता है। सिर का पिछला भाग पीछे की ओर निकला हुआ, ठोड़ी मज़बूत तथा नाक बहुत पतली, सीधी और ऊँची होती है। इस प्रजाति की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि इसकी त्वचा में वर्णक (pigment) नहीं होता जिसके कारण इसकी त्वचा रक्त वर्ण की होती है, बाल सुनहरे (gold blond) तथा आँखें नीली होती हैं। यह जाति भारतवर्ष के उत्तरी मैदान में रहती है। पंजाब, राजपूताना तथा उत्तर प्रदेश के कुछ वर्गों में नॉरडिक रक्त है। पूर्व की ओर यह बंगाल तक फैली है। महाराष्ट्र में यह चौड़े सिर की प्रजातियों से मिश्रित हो गयी है।